ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
PP. NO. 46-48
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

परिणात्मक एवं गुणात्मक शोध : एक सामाजिक अन्तर्वस्तु

राजीव कुमार श्रीवास्तव

विभागाध्यक्ष –समाजशास्त्र विभाग, समन्वयक – उ0प्र0 राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,पी0जी0 कॉलेज बॉसडीह, बलिया, (उ0प्र0) भारत

सारांश – पीटर बर्गर ने अपनी पुस्तक "पिसमिड्स ऑफ सैक्रिफाइस" में सामाजिक विज्ञान में मूल्य के अत्यन्त विवादास्पद विषय पर एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए एवं सिद्धान्त नीति और नैतिकता के आन्तरिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "एक व्यक्ति मूल्य स्वतंत्र विज्ञान की कामना कर सकता है, किन्तु मूल्य निरपेक्ष नीति एक निरर्थक कल्पना है", इसकी पुष्टि मिर्डल ने भी की है।

जब हम यह कहते है कि एक विशिष्ट सामाजिक परिपाटी या परम्परा नैतिक दृष्टि से गलत है, तो हमारा यह विचार नैतिक मूल्यों से ग्रसित है। गरीबी काम के प्रति उदासीनता या किसी विकास योजना जैसे मनरेगा या शासक अभिजनों को भ्रष्ट मानकर उनका अध्ययन करना, यह हमारे मूल्य निर्णयों को दर्शाता है।

हमारे यह निर्णय ही हमें किसी विषय के अध्ययन की ओर आकर्षित करते है। बहुत कम समाज वैज्ञानिक ऐसे विषयों का अध्ययन करते है, जिन्हें वे निरर्थक या महत्वहीन समझते है।

अल्डुअस हक्सले के अनुसार– "ज्ञान सर्वोच्च हितकारी है सत्य परम मूल्य है और अन्य सभी उद्देश्य द्वितीयक एवं गौण है ।"

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

मानव, अपने समाजों, समूहों और अपने आसपास के परिवेश, जिसमें वे रहते और विचरण करते थे, के बारे में सदियों से चिन्तन और उसका अवलोकन करता आया है। अज्ञात को जानने व पहचाने की इच्छा मानव में शुरू से रही है। इस इच्छा व जिज्ञासा ने ही मानव को सर्वप्रथम प्राकृतिक जगत के रहस्यों (भूकम्प, भूचाल, मौसम परिर्वतन, सितारों का आवागमन, बादलों का गरजना–बरसना, बिजली का कड़कड़ाना और पृथ्वी पर गिरना जैसी अनेक घटनाओं) के बारें में जानने के लिए जिज्ञासा व उत्सुक हुआ होगा। इसके बाद से ही मानव की जिज्ञासा प्रवृत्ति ने मानव को अपने बारे में, अपने समूह और समाज के बारे में जानने और समझने के बारे में आकृष्ट किया होगा।

सामाजिक जीवन की अनके घटनायें, जिसके बारे में हम गहनता से सोचते है, समझने का प्रयास करते है और शोधात्मक दृष्टि अपनाते है। जैसे– विभिन्न व्यक्तियों के बीच किस प्रकार सम्बन्ध बनते है और बाद में नजदीक होते हुए भी क्यों टूट जाते है (जैसे– तलाक), कुछ समाज लगभग स्थिर है और कुछ समाजों में तीव्रगति से बदलाव हो रहे है, क्यों? क्यों कुछ व्यक्ति आत्म हत्या करते है और कुछ लोग मादक द्रव्यों (शराब, सिगरेट, गांजा, भांग, जर्दा, गुटखा आदि) के बारे में जानते हुए कि स्वास्थ्य के लिए हॉनिकारक है, के बाद भी सेवन करते है, जबकि अधिकांश नहीं? जबकि कुछ व्यक्ति दूसरे की वस्तुओं की चोरी करते है, हत्या करते है ? ऐसे ही अनेकों प्रश्न है, जैसे परिवारों का टूटना, आतंकवाद, सभी समाजों का एक सा रूप ना होना, परिवारों के अनेक रूप, भिन्नता व अनेकानेक घटनाओं व मुद्दों ने मानव को अपने मष्तिष्क पर जोर डालने, चिंतन करने एवं सुलझाने के लिए प्रेरित किया है।

किन्तु, इन विषयों तथा सामाजिक जीवन की कई अन्य घटनाओं, प्रक्रियाओं और गुत्थियों को जानने–समझने के लिए जिन विधियों का प्रयोग आज किया जाता है, वे पुरानी विधियों से सर्वथा भिन्न है। पहले इनका समाधान व निर्णय, पारलौकिक शक्तियों, धार्मिक विचारों, कोरी कल्पनाओं, कहावतों और तर्क वाक्यों या परम्परा से चले आ रहे ज्ञान के आध ाार पर की जाती थी। बहुत समय तक हमारे ऋषि–मुनियों के कथन और धार्मिक–पौराणिक ग्रन्थों में संचित ज्ञान ही सामाजिक और व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के स्रोत रहे।

परन्तु, आज सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन की गुत्थियों को सुलझाने या उनके बारे में नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक, उपरोक्त वर्णित ज्ञान के स्रोतों और विधियों के स्थान पर जिस विधि का प्रयोग किया जाता है, उसे वैज्ञानिक विधि कहते है, जिसकी शुरूआत 19वीं–20वीं शताब्दीं में हुई थी। वैज्ञानिक विधि के अपने सिंद्धान्त और शोध प्रक्रिया हैं, जिसका वर्णन–विश्लेषण अपने में सार गर्भित है।

सामाजिक शोध का अर्थ एवं परिभाषा – स्लेसिंगर एवं स्टीवेंशन के अनुसार – "सामाजिक शोध सामाजिक जीवन के अन्वेषण, विश्लेषण तथा अमूर्तीकरण की वैज्ञानिक विधि है, जिसका उद्देश्य ज्ञान को आगे बढाना, संशोधन करना और सत्यापित करना होता है।"

लुण्डबर्ग के अनुसार– "सामाजिक शोध उन अन्तर्निहित प्रक्रियाओं की खोज है, जो साथ–साथ में रहने वाले व्यक्तियों के

अनुरूपी लेखक